Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi A: literature – Higher level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau supérieur – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel superior – Prueba 1

Wednesday 4 May 2016 (afternoon)
Mercredi 4 mai 2016 (après-midi)
Miércoles 4 de mayo de 2016 (tarde)

2 hours / 2 heures / 2 horas

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a literary commentary on one passage only.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire littéraire sur un seul des passages.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario literario sobre un solo pasaje.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

2216 – 0093

© International Baccalaureate Organization 2016

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

https://xtremepape.rs/

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए।

1.

जेठ की उमस भरी शाम। कार में पेट्रोल भरवाना था। सोचा चलो आज शनिवार है कल तो छुट्टी ही रहेगी, और कार लेकर निकल पड़ी। यहाँ आकर पता चला कि लोग इसलिए आज ही टंकी “फुल” करा रहे थे कि वित्त मंत्री ने घोषणा कर दी है कि कल दोपहर बारह बजे से पेट्रोल के दाम छह रुपए पच्चीस पैसे बढ़ जाएंगे स्कूटर बाइक्स ढोने से इंतज़ार करते हुए लोगों के चेहरे पर एक लाचार रोष की छाया थी। “अब तो साब, वही साइकिल का जमाना आएगा देखना और ये तुम्हारे हाथी-घोड़े सब अस्तबल में खड़े दिखाई देंगे।” पसीने से तरबतर “एक खीझा हुआ” मरियल-सा आदमी स्कूटर पर लाइन में लगा सार्वजनिक रूप से यह घोषणा कर रहा था। पहले से खड़े लोगों के बुझे हुए चेहरों पर कु-संभावनाओं की छाया-सी तिरने लगी। डरे हुए लोगों के मन में अपने डर भी कुरेद लेना हिंदुस्तानी आदमी की फितरत में शामिल है। खैर जैसे-तैसे मैंने भी लोगों की देखा-देखी टंकी “फुल” करा ली। पेट्रोल भराकर अभी कुछ ही दूर चली थी कि सड़कों पर घुप्प अंधेरा। लाइट चली गई थी। पावर कट दुकानों से लेकर, सड़क, बस अड्डा, नगरपालिका का कार्यालय, पुलिस चौकी, सब पर अँधेरों के काले रंग पुत गए थे। कहीं-कहीं चिमनी, मोमबत्ती की कमजोर सी लौ अंधेरे से भिड़ने की नाकाम कोशिश कर रही थी। तेरा लाख-लाख शुक्र है कि हम कैम्पस में रहते हैं, मैंने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया। लेकिन जैसे ही कॉलेज परिसर का मेन गेट आया, देखा वहाँ भी घुप्प अंधेरा पसरा है, पूरे कैम्पस में। अनहोनी। रात के आठ बज रहे हैं और बिजली गुल। छह साल हो गए इस कैम्पस में रहते हुए। आज पहली बार मुझे डर लग रहा था उन सुनसान अंधेरी लंबी सड़कों पर। ज़्यादातर के चेहरों पर चिंता और रोष की लकीरें। खुश थे तो बच्चे जो आज़ाद परिंदों से अंधेरी सड़कों पर जैसे उड़ते फिर रहे थे। मैंने घर आकर जैसे ही कार पार्क की, घर के सामने खड़ी की, हमारी पड़ोसन मिसेज़ वर्मा और मिसेज़ गुप्ता आ गईं। “देखा मिसेज़ शर्मा... मिसेज़ गुप्ता के चेहरे पर रोष था।... कभी लाईट नहीं गई थी और अब देखो, ये चालीस-चालीस हज़ार के ऐसी दीवारों में उल्लुओं जैसे बैठे हैं पर इन्वर्टर से कम्बखत चलते ही नहीं।” वो बुरी तरह खीझी हुई थीं। देखते ही देखते मेरे घर के बाहर और चार छह लोग इकट्ठा हो गए और भीड़ का एक छोटा सा गुच्छा बन गया। मैं भी वहाँ की भीड़ जोड़ू परंपरा में शामिल हो सबकी हाँ में हाँ मिला रही थी। ठीक दो घंटे बाद बिजली आ गई। सब अपने अपने घरों में घुस गए जैसे सूखे पत्ते धूलभरी आँधी में उड़कर किसी कोने में सिमट जाते हैं। दूसरे दिन लोग पिछली रात की घटना को भूल चुके थे “रात गई बात गई” के अंदाज में, लेकिन जैसे ही सात बजकर पैंतालीस मिनट हुए बिजली गुल। अंधेरी सड़कें जिन पर सन्नाटे मस्त टहल रहे थे, हड़बड़ाकर इधर-उधर कोनों में छिप गए जैसे ही किवाड़ों के एक के बाद एक खुलने के भीषण स्वर सुनाई देने लगे। ये तो सचमुच कैम्पसवासियों के धैर्य की परीक्षा थी। लोग जो मन में आया बोले जा रहे थे। तीसरे दिन फिर इधर घड़ी का कांटा सात पैंतालीस पर उधर लाइट आउट। अगले दिन सुबह-सुबह मिसेज़ जगमोहन और मिसेज़ गुप्ता घर आईं स्निग्धा, भई हम लोग तंग आ चुके हैं इस पावर कट से। तय हुआ कि स्त्रियाँ जाएंगी नगरपालिका के कार्यालय। वहाँ से भी हम वीरांगनाओं को अपना सा मुँह लेकर वापस आ जाना पड़ा। कहा गया की “पूरे हिंदुस्तान में बिजली की कमी है। आपका घर हिंदुस्तान से बाहर है क्या ?” अंतिम प्रयास भी औंधे मुँह धड़ाम से गिर गया था।

https://xtremepape.rs/

धीरे-धीरे लोगों ने पावर कट के मुताबिक अपने काम निपटाने शुरू कर दिए। पावर कट एक आदत और रूटीन में शामिल हो गया। इस पावर कट से कैम्पस में एक अभूतपूर्व रौनक और हलचल आ गई थी। निर्धारित समय के पूर्व ही लोग घरों के बाहर बने बगीचों को पानी से सींच देते। कुर्सियाँ बिछ जाती, लोग गप्पें करते, बच्चे बगीचों में बैठे या सड़कों पर भागते दौड़ते नज़र आने लगे। लड़के-लड़कियाँ अपना अलग गुट बनाकर हँसी-मज़ाक हास-परिहास करते। परिसर में मिट्टी के घड़े, हाथ के पंखे, आइसक्रीम, खरबूजा, बर्फ के गोलों जैसी बेचनेवालों की टेर सुनाई देने लगी। उस दिन कैम्पस में पहुँचते-पहुँचते आठ बजकर दस मिनट हो चुके थे यानि पावर कट का टाइम। जैसे ही मेन गेट में कार दाखिल हुई पूरा कैम्पस रोशनी से नहाया हुआ था। आज बिजली नहीं गई है, लेकिन आज भी सड़क पर थोड़ी गहमा-गहमी थी। कुछ पुरुष-महिलाएँ बातचीत में निमग्न थे। बच्चे घरों में से झांक रहे थे। गुप्ता जी के हाथ में कुछ था और वे चिल्ला रहे थे। “बताइए कल ही खरीदी है ये इमरजेंसी लाइट पूरे पंद्रह सौ की और आज लाइट ही नहीं गई।” “अरे गुप्ता जी, सुना है कि आगे से ही खराबी थी बिजली में, अब ठीक हो गई है। अब नहीं जाएगी लाइट।” मैंने देखा मिसेज़ पाठक और मिसेज़ शर्मा चली आ रहीं हैं मेरे पास। कुछ चिंतित स्वर में बोलीं- आज पावर कट क्यों नहीं हुआ?

वंदना शुक्ल, सितंबर (2014)

https://xtremepape.rs/

2.

सबके जीवन में होती है

मैं कोई बुद्ध नहीं हूँ
न ही होना चाहता हूँ
बुद्ध का बोधित्व तो दूर
उनके उपदेशों का भी एक संतोष भर नहीं है मुझमें
पर मैं यह नहीं मान सकता
कि मेरे जीवन में नहीं है उनके जैसे सुजाता*
जिसके हाथ खीर खाकर
बोधत्व प्राप्त किया था उन्होंने
सच तो यह है कि मेरे जीवन में भी है सुजाता
जिसके हाथों खीर तो नहीं
पर कभी एक ग्लास ठंढा पानी पीकर
हमने सुलझाई भी हैं अपनी हजार उलझनें
तो कभी एक प्याला-गरम चाय पीकर
अपनी ठंडी होती दिनचर्या में पाई है
गर्माहट और कभी फोन पर
प्यार के दो मीठे बोल सुनकर
दूर किया है अपने
रोज़मर्रे की जिंदगी में भर आया उदासीपन
और तो और
उसके स्नेह सानिध्य में बैठ बोल बतिया कर ही हमने
बनाई है कई कई रणनीतियाँ और ढूंढ निकाले हैं रास्ते
घर दफ्तर और कारोबार के बीच
जीवन की भूल-भूलैया में भटकते हुए
सच कहूँ तो
मुझे तो यह भी लगता है
कि मेरे ही जीवन में नहीं
सबके जीवन में होती है
कहीं न कहीं कोई न कोई सुजाता
जो स्याही-सोखता की तरह सोखती है
अपने-अपने
बुद्ध की पीड़ा और थकान
देकर तन मन की ऊर्जा और प्रेम
सबके जीवन में होती है
कहीं न कहीं कोई न कोई सुजाता !

अशोक सिंह, दिसंबर-जनवरी (2014)

https://xtremepape.rs/

* सुजाता: सुजाता नामक नारी ने तपस्या में लीन कमजोर बुद्ध को देखा और उनसे खीर खाने का आग्रह किया। खीर खाते ही बुद्ध के शरीर में जान आ गई। बाद में उन्होने महसूस किया कि तपस्या और ज्ञान-प्राप्ति के लिए शरीर को कष्ट पहुँचाना ज्ञान-प्राप्ति का सही मार्ग नहीं है। महात्मा बुद्ध के द्वारा सुजाता की दी हुई खीर को स्वीकारने के कारण ही सुजाता की खीर उद्धरण में आई।

https://xtremepape.rs/